

# शरबत



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला विर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,  
राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ,  
सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कनक शशि

सज्जता तथा आवरण - निधि बाथवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रयोगिकी  
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.  
वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामचन्द्र शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक  
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजुला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग  
डेवेलपमेंट सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अरवि चव्हाण, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी  
विश्वविद्यालय, वर्या; प्रोफेसर फरीदा, अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक-अध्ययन  
विभाग, आदिशिक्षा मंत्रालय इस्तांबुल, दिल्ली; डा. अपूर्वचंद, रीडर, हिंदी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा. राबिन मित्रा, सी.ई.ओ., आई.एल. एन.एफ.एस.,  
मुंबई; सुश्री नुबहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रंजित धनकर,  
निदेशक, विस्तार, जयपुर।

80 बी.एस.एस. फेस पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में लॉन्च, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग,  
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा केन्द्रीय प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, सख्कर-ए,  
मद्रास 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बद्ध-संस्करण)

978-81-7450-875-1

बद्ध क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। बद्ध की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बद्ध बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोशनी की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बद्ध' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बद्ध पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बद्ध से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हर एक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बद्ध को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

समाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापा तथा लोकप्रियता, मशीनी, फोटोकॉपी, डिजिटल अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. केंद्र, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26762738
- 108, 109 फोन सेल, वेतो एम्प्लॉय, हंसदेव, नगरपालिका III स्टेशन, बंगलूर 560 083  
फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.एन.पी.सी. केंद्र, निकटः भनकरा बस स्टॉप पवित्र, कोलकाता 700 114  
फोन : 033-25130454
- सी.एन.पी.सी. कॉम्प्लेक्स, पल्लीपैव, गुजरात 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : श्री. राजकुमार  
मुख्य संपादक : श्वेता उपाध्याय

मुख्य उत्पादन अधिकारी : किश कृष्ण  
मुख्य व्यापक अधिकारी : गीता गुप्ता



# शरबत



तोसिया



मिली



2

एक दिन तोसिया और मिली ने शरबत बनाया।  
दोनों ने पानी में लाल-लाल शरबत घोला।





3

शरबत में चीनी भी मिलाई।  
उसमें खूब सारी बर्फ डाली।



तोसिया और मिली शरबत पीने बैठ गईं।  
वे शरबत पीते-पीते बातें करने लगीं।





तोसिया हाथ हिला-हिलाकर बात कर रही थी।  
उसका हाथ लगा और शरबत गिर गया।



6 मिली ने तोसिया को अपना आधा शरबत दे दिया।  
दोनों फिर शरबत पीने लगीं।





तोसिया की नज़र गिरे हुए शरबत पर पड़ी।  
उसे गिरा हुआ शरबत बादल जैसा लगा।



8

तोसिया ने शरबत में उँगली घुमाकर मछली बना दी।  
उसने मछली की पूँछ भी बनाई।





मिली ने गिरे हुए शरबत से फूल बना दिया।  
फूल के नीचे दो पत्तियाँ भी बनाई।



10

तोसिया ने फूल मिटा के सूरज बना दिया।  
तोसिया ने सूरज की लंबी-लंबी किरणें बनाईं।





फिर तोसिया ने एक नाव बनाई।  
तोसिया ने नाव पर एक झंडा बनाया।



12

मिली ने उस झंडे में से एक पतंग बना दी।  
तोसिया ने पतंग की लंबी डोर बनाई।





वह पतंग की डोर को पूरे कमरे में खींचती रही।  
मिली उसके पीछे-पीछे चल रही थी।



14

तोसिया बोली कि ममता को बुलाकर लाते हैं।  
उसको यह सब दिखाएँगे।



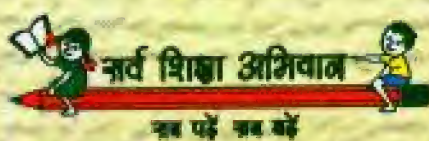


तोसिया और मिली ममता के साथ लौटीं।  
शरबत की पतंग और डोर तो गायब थी।



उन्होंने देखा कि मुनमुन सारा शरबत चट कर चुकी थी।  
तोसिया और मिली जोर-जोर से हँसने लगीं।





2074



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (कठ्ठा-सैट)  
978-81-7450-875-1